आधुनिक हिन्दी कविता में किसान जीवन : संवेदना और त्रासदी

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,

आगरा से हिन्दी में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबंध की

रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. रंजना पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर

शोध छात्र

आलोक यादव

हिंदी विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा 282005

2022

शोध परिचय :-

`किसान' महज एक शब्द नहीं है। यह भारतीय सभ्यता की ऐसी जमात है जो पूरे देश का भरण पोषण करती है। हमारे देश की आधे से ज्यादा आबादी कृषि पर ही निर्भर है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। किसान खून पसीना एक कर तपती हुई धूप, मूसलाधार बारिश तथा जाड़ों की कड़कड़ाती ठंड की परवाह किए बिना जी तोड़ मेहनत करते हैं। वह अपनी इस मेहनत से न सिर्फ जीविकोपार्जन करते हैं अपितु संपूर्ण देश के लिए अन्न उपजाते हैं इन सबके बावजूद हमारे देश में सबसे ज्यादा खराब स्थिति किसानों की है। पूरे देश को अन्न प्रदान करने वाला आज स्वयं से भूख से तड़प रहा है।

साहित्य एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसमें किसी भी देश के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ का चित्रण रहता है। समाज का यथार्थ सच्चे अर्थों में साहित्य में ही देखने को मिलता है क्योंकि कोई भी साहित्यकार अपने समाज के यथार्थ को अनदेखा कर साहित्य का सृजन नहीं करता है। ऐसा कभी नहीं होता है कि समाज की धारा कुछ और हो और साहित्य की धारा कुछ और हो। वह प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से समाज की विसंगतियों एवं समस्याओं को अपनी रचनाओं में अवश्य ही शामिल करता है। भारतीय किसानों की जो दयनीय दशा है उसका भी अत्यंत मार्मिक, सजीव यथार्थ चित्रण हिंदी साहित्य में उपलब्ध है। हिंदी कविता में जब हम किसान जीवन के यथार्थ की छानबीन करते हैं तब हम पाते हैं कि किसानों की दुर्दशा का चित्रण आधुनिक कविताओं से बहुत पहले ही मध्यकालीन कविता में हो चुका है। मध्यकाल में किसानों की हालत अत्यंत दयनीय थी। भारी भूमि कर ने उन्हें पीस डाला था। राजस्व अधिकारी कर निर्धारण में बहुत हेरफेर करते थे साथ ही गांव के मुखिया से मिलकर उनसे सांठगांठ कर किसानों को पीड़ित करते थे। किसानों से लगान की वसूली सख्ती से की जाती थी। किसान यह सब सहने को बाध्य थे। कर्मचारियों द्वारा किसानों का दमन इस कदर होता था कि वे चूं तक नहीं कर सकते थे। गांव के लेखपाल, पटवारी तथा अन्य राजस्व अधिकारियों द्वारा चौतरफा शोषण, दमन के ब्यूह में घिरे किसानों की दयनीयता का अनुमान कबीर की इन पंक्तियों से लगाया जा सकता है- "अब न बसूं इहिं गाऊं गुसाईं, तेरे नेवगी खैरे सयाने हो राम"कबीर के उपर्युक्त पद में किसान गांव में रहने की अनिच्छा प्रकट करता है वह गांव छोड़कर भागना चाहता है। किसान और कृषि कर्म से संबंधित शब्दावली का प्रयोग कबीर की रचनाओं में अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। यह कृषि-कर्म से कबीर के अच्छी तरह परिचित होने का प्रमाण है-"नैना नीझर लाइया, रहट बसै निजधाम ", "बुधि मेरी किरषी गुरु मेरो बिझूका" `रहट' उस समय सिंचाई का सबसे कारगर साधन था तथा `बिझूका' जानवरों को डराने के लिए बनाया गया पुतला आदि शब्दों से स्पष्ट होता है कि

कृषि कर्म से संबंधित अनेक छोटी-छोटी बातों की जानकारी कबीर को है। सूर की कविता में भी किसान जीवन का चित्रण हुआ है। वे कृषक समाज के दुःख-सुख, हर्ष-उल्लास तथा छोटी से छोटी बातों से परिचित थे। किसान जीवन की गहरी समझ उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने अपने एक पद में खेती के विभिन्न साधन, उसकी पूरी प्रक्रिया, कठिनाइयों ,किसानों के श्रम और बंजर भूमि का समग्र चित्र इस प्रकार प्रस्तुत किया है-"प्रभु जी यौं कीन्हीं हम खेती, बंजर भूमि गाउं हर जोते अरु जैती की तैती।" सूर के अनेक पदों में खेती की निराई, गुड़ाई से लेकर ऋतुओं एवं पानी की आवश्यकता के अनुसार फसलों की बुवाई आदि की जानकारी भी मिलती है-"सूरदास तीनों नहिं उपजति धनिया धान कुम्हाड़े।"साथ ही सूरदास ने अपने युग की सामंती व्यवस्था में किसान जीवन की समस्याओं, लगान और ऋण बोझ से हो रहे उनके शोषण का मार्मिक चित्रण भी किया है-"सबै कूर मोसों ऋण चाहत, कहौ कहा तिन दीजै।" सूर की कविता अपने समय की सामंती व्यवस्था के शोषण, अत्याचार और किसानों के दुःख, दर्द, पीड़ा को प्रस्तुत करने वाली कविता है । तुलसीदास केवल भक्त कवि ही नहीं, किसान जीवन के भी कवि हैं। वे समाज और संसार की पीड़ा से भी सरोकार रखते हैं। बेरोजगारी और बेरोजगारी से उत्पन्न निर्धनता की दशा को भी अच्छी तरह समझते हैं। उन्होंने अकाल भुखमरी बेरोजगारी और महामारी की विभीषिका का जो चित्र खींचा है, उससे तुलसी की यथार्थ भावना और मानवीय चिंता का बोध होता है। उससे यह भी साबित होता है कि मध्यकाल में सब कुछ ठीक-ठाक न था, आम जनता मौत के तांडव को भयभीत नजरों से देख रही थी। वे कवितावली में तत्कालीन समाज व्यवस्था के पस्त हालात का चित्र खींचते हुए कहते हैं कि "खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।" तथा "किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी भाट, पेट ही को पचत, बैचत बेटा-बेटकी।" खेत'किसान के जीविकोपार्जन का सबसे मुख्य साधन है और वही उनके पास नहीं है। उस समय की अकाल और भुखमरी की भयावह स्थिति का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि भिखारी भी भीख पाने में असमर्थ है। जनता सारे ऊंच-नीच कर्म और धर्म-अधर्म करने के बाद भी जब पेट की आग बुझाने में असमर्थ होती थी तो उसे बेटा-बेटी तक बेचना पड़ता था। बेटा-बेटी बेच कर भी पेट की आग बुझाने में जनता की असमर्थता का चित्रण करके तुलसीदास ने उस सामंती समाज के अमानवीय यथार्थ को साकार कर दिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज किसानों की जो दयनीय दशा है, उसका आभास तुलसीदास को अपने समय यानी मध्यकाल में ही हो चुका था। अतः निश्चित ही उनके समय में भी किसानों की हालत बहुत अच्छी नहीं थी। वे शुरू से ही जीने के लिए संघर्ष करते आ रहे हैं। रीतिकाल में घाघ, डाक, भड्डरी की किसान कविताएं बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान प्रांतों के किसान जीवन और उसकी गतिविधियों को संचालित, नियमित, नियंत्रित एवं

गतिशील रखने वाले अनुभव मंत्र हैं। इन तीनों ही कवियों की प्रसिद्धि एवं जनप्रियता किसान जीवन में जबरदस्त रही है। इनकी काव्य सूक्तियों की अंतर्वस्तु में कृषि उत्पादन पद्धति, रोपनी, निराई बोआई, कटाई, गोराई,ओसौनी आदि की अवधि, अकाल,वर्षा ,सूखे की जानकारी, मिट्टी, बीज एवं खाद की विभिन्न किस्मों का ज्ञान और मौसम के आपसी संबंधों की जानकारी भरपूर मात्रा में मिलती है। किसान कवि घाघ अपनी अनेक किसान कविताओं में खेतों में श्रम करने वाले किसान को ही वास्तविक किसान मानते हैं-"बांधे कुदारी खुरपी हाथ। लाठी हंसुआ राखे साथ, काटे घास ओ खेत निरावे। सो पूरा किसान कहावे "इन किसान कविताओं की अंतर्वस्तु से पता चलता है कि तत्कालीन समाज में वाणिज्य तथा सेवकाई से ज्यादा समृद्ध पेशा खेती था। घाघ लिखते हैं-"उत्तम खेती मध्यम बान, निषिद चाकरी भीख निदान" ग्रह, नक्षत्र एवं मौसम संबंधी ज्ञान इन कविताओं की बुनियादी विशेषताएं हैं। भड्डुरी की ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-"शुक्रवार की बादरी रही सनीचर छाय। तो यों भाखैं भड्डुरी, बिन बरसे ना जाय। डाक कवि ने भी बरसा के संबंध में इस प्रकार लिखा है-"तीतर-पंख मेधा उड़े ओ विधवा मुसकाय।कहे डाक सुनु डाकिनी ऊ बरसे ई जाय।"स्पष्ट रूप से किसान कविता की परंपरा में घाघ, डाक और भड्डुरी की किसान काव्य सूक्तियों का महत्व बहुत ज्यादा रहा है। आधुनिक हिंदी कविता में किसानों के दुःख दर्द का वर्णन भारतेंदु युग की कविताओं से ही शुरू हो जाता है। जब राजनीतिक अधिकार होते ही अंग्रेजों ने भारत को आर्थिक रूप से लूटना आरंभ कर दिया, साथ ही साथ उन्होंने भारत के देशी कुटीर उद्योगों का अंत करके अपने यहां निर्मित विदेशी चीजों का आयात कर भारत की आर्थिक व्यवस्था को तोड़ दिया। यहां कुटीर उद्योगों से उत्पादित चीजों महीन वस्त्र आदि का व्यापार करके जीवन निर्वाह करने वाले व्यापारी और अन्य उद्योगों से जीवन निर्वाह करने वाले लोग भी बेरोजगार हो गए। कुछ लोग विवश होकर खेती करने को तैयार हो गए लेकिन अंग्रेजों की शोषणकारी नीति ने वहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। औपनिवेशिक भू - राजस्व की नई प्रणाली से खेती लायक जमीन पर दबाव भी काफी बढ़ गया ।इस तरह कृषि का पूरा ढांचा ही बदलने लगा। वहीं जमीदारी वाले इलाकों में किसानों पर अत्याचार बढ़ने लगे जमीदार मनमाने ढंग से अवैध लगान वसूलते और बेगार करवाते। इसका नतीजा यह हुआ कि किसान धीरे-धीरे महाजनों के चंगुल में फंसते गए। इस तरह उनकी जमीन, फसलें उनके हाथ से निकलकर जमीदारों, व्यापारियों, महाजनों हाथों के में पहुंच गई। शासक वर्ग और पूंजीवादियों की शोषणकारी नीतियों ने जनता की जड़ता को तोड़ा और शिक्षित वर्ग में एक राजनीतिक चेतना जागी। हिंदी -भाषी क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र इस चेतना के अग्रदूत थे। विदेशी शासन का शोषण,अत्याचार, अंग्रेजी संस्कृति का दुष्प्रभाव ,राष्ट्रीय एकता ,वाणिज्य ,व्यवसाय ,कारीगरी खेती , शिक्षा आदि ने उन्हें आकृष्ट किया। भारतेंदु ने अपने समय की समस्याओं से टकराते हुए अपने साहित्य को

समकालीन यथार्थ के धरातल पर खड़ा किया। भारतेंदु ने पहली बार सामान्य मनुष्य का साहित्य रचा। अंग्रेजों की अनीति, अन्याय ,अत्याचार ,आर्थिक लूट,और भारत को हर प्रकार से लाचार कर देने वाली अंग्रेजों की नीति का भारतेंदु पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे आर्थिक शोषण की चक्की में पिस रहे किसानों की दुर्दशा से अच्छी तरह परिचित थे। महंगाई ,अकाल, टैक्स, और दरिद्रता आदि समस्याओं की सफल अभिव्यक्ति उनकी कविता में स्पष्ट दिखाई पड़ती है -"मरी बुलाऊं देश उझाड़ू महंगा करके अन्न, सबके ऊपर टिकस लगांऊ धन है मुझको धन्न।"किसानों की दीन-दशा का आभास देने वाली कविता की मार्मिक पंक्तियां भारतेन्दु जी के साथ-साथ उस काल के अन्य कवियों में भी पूरी संवेदनशीलता के साथ मिलती हैं। किसानों की दीन दशा का चित्रण भारतेंदु युग में बद्रीनारायण चौधरी `प्रेमघन' जी ने भी किया है। उनके जीर्ण-जनपद शीर्षक प्रबंध काव्य में किसानों के अभिशप्त जीवन की करुण झांकी देखने को मिलती है-"दीन कृषक जन औरहु दया योग दरसावहीं। जिनके तन पर स्वच्छ वस्त्र कहुं लखियत नाहीं।"प्रताप नारायण मिश्र ने भी अपनी 'बेगार विलाप' नामक कविता में पुलिस अधिकारी के द्वारा किए गए अत्याचार,गुलामी, दमन और बेगारी से त्रस्त कृषक मजदूरों की पीड़ा को इस प्रकार व्यक्त किया है-"बोझ धरत खैंचत लढ़ा बीतत दिन चहुंयाम, मानुष है करनो परे हमें बैल को काम।"इसके अतिरिक्त प्रताप नारायण मिश्र ने 'ब्रेडला स्वागत'कविता में अकाल,भुखमरी और घास फूस की झोपड़ी में जिंदगी जीने को मजबूर कृषक समाज की त्रासदी का विस्तार से ब्योरा प्रस्तुत किया है- "सागपात संग रूखो सूखो अन्न खाहिं नित, जिनकी पूंजी केवल हर पुर खुरपा खारा, घास फूस के धरन माहिं जे करहिं गुजारा।" बालमुकुंद गुप्त ने वर्षा, वसंतबंधु,मेघमनावनि, वसंतोत्सव जैसी कविताओं में जहां किसान जीवन और प्रकृति के संबंधों का चित्रण किया है वहीं अनेक कविताओं में किसानों की स्थिति पर दुख प्रकट कर किसानों के प्रति अपनी सचेत दृष्टि का परिचय देते हैं। जो किसान दिन-रात हर मौसम में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं उन्हें ही दो वक्त का भरपेट भोजन नसीब नहीं होता है। गुप्त जी इस पूरी स्थित का जिम्मेदार किसी प्राकृतिक आपदा को न मानकर इसका कारण उस साम्राज्यवादी शासन नीति को मानते हैं जो किसानों की स्थिति का वास्तविक जिम्मेदार है। बालमुकुंद गुप्त 'सर सैयद अहमद का बुढ़ापा' नामक कविता में अंग्रेजी राज की क्रूरता और दमन का सूक्ष्मता व समग्रता से वर्णन करते हुए कहते हैं-"अहा!बेचारे दुःख के मारे निश-दिन पच-पच मरें किसान, जब अनाज उत्पन्न होय तब सब उठ वा ले जाय लगान।" बालमुकुंद गुप्त ने इस कविता में किसानों की दुर्दशा का जो वर्णन किया है उससे स्पष्ट है कि लगान में ही सारा अन्न चले जाने के कारण किसान वृक्षों की छाल चबाकर पेट भरने को विवश है। द्विवेदी युग में देखें तो इस युग के कवियों द्वारा किसान जीवन और यथार्थ को लेकर लिखी गई कविताओं में गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही की 'दुखिया किसान' तथा 'आर्त कृषक'प्रमुख है।

इन कविताओं में 'सनेही' जी ने दिन-रात श्रम करके अन्न उपजाने वाले किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन करने के साथ-साथ उनको मिलकर लूट रहे महाजन एवं जमींदार वर्ग के अमानवीय रूप को भी उजागर किया है-"नजराने देते पेट काट कारिंदे लेते लहू चाट", कितने ही बेढव सूदखोर लेते हैं हड्डी तक चिचोर"'सनेही' जी द्वारा रचित 'कृषक क्रंदन' में भी शोषण का शिकार हुए एक कृषक परिवार की बर्बादी की कथा कही गई है। भूख से दम तोड़ने वाला नायक मरते समय भगवान से यह प्रार्थना करता है कि "हे प्रभु अब इस क्रूर देश का मुंह न दिखाना, कुछ भी रचना और किंतु मत कृषक बनाना।" द्विवेदी युगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त की नजरों से भी किसान जीवन अछूता नहीं रहा है। उन्होंने भारतीय कृषकों की दरिद्रता, दुर्भिक्ष व उनकी अनेक समस्याओं का हृदय विदारक चित्रण भारत-भारती में प्रस्तुत किया है-"सौ में पचासी जन यहां निर्वाह कृषि पर कर रहे,पाकर करोड़ों अर्ध्द भोजन सर्द आहें भर रहे।"इस प्रकार गुप्तजी गर्मी,सर्दी,बरसात आदि अनेक विपरीत परिस्थितियों में पूरी कर्मठता से श्रम में लीन रहने वाले किसानों की बदहाली का जिम्मेदार केवल प्रकृति और मौसम को ही न मानकर महाजन एवं जमीदार वर्ग को ठहराते हैं। भारत- भारती के अलावा किसानों के जीवन पर केंद्रित 'किसान' खंडकाव्य गुप्त जी की ऐसी रचना है जो इतिहास, पुराण का सहारा न लेकर सीधे-सीधे किसानों के सामाजिक यथार्थ को हूबहू हमारे सामने प्रस्तुत करती है। इसमें अंग्रेज, जमीदार और महाजन के शोषण एवं अत्याचार से पीड़ित कृषक मजदूरों की दुर्दशा को विस्तार से अभिव्यक्त किया गया है- "बनता है दिन-रात हमारा रुधिर पसीना, जाता है सर्वस्व सूद में फिर भी छीना, हां हां खाना और सर्वदा आंशू पीना" कुल मिलाकर 'किसान' कृत भारतीय किसान के वास्तविक जीवन की पीड़ा को एक महत्वपूर्ण प्रश्न बनाकर सामने रखती है। गुप्तजी ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य साकेत में भी किसान जीवन का बहुत सुंदर चित्रण किया है। जिसमें राम और सीता को आजीविका के लिए कृषि कार्य में रत दिखलाया गया है। राम सीता को सही ढंग से कृषि करने की विधि समझाते हुए कहते हैं-"पौधों को सीचों ही नहीं इन्हें गोड़ों भी"छायावादी कवियों में किसान जीवन के यथार्थ का सशक्त वर्णन सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की अनेक कविताओं में हुआ है। वे भारतीय कृषक के शोषण से न केवल क्षुब्ध दिखाई देते हैं वरन् उसे शोषण मुक्त करने हेतु कांति का आह्वान करते हुए 'बादल राग' में लिखते हैं-"जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर, ऐ विप्लव के वीर।" बादल के साथ कवि का रिश्ता बहुत गहरा है वह जीवन के सूखेपन में भी बादल को बुलाता है-"बादल रे जी तड़पे" निराला ने 'उत्साह' नामक कविता में बादलों को क्रांतिदूत मानकर सोए,अलसाए और कर्तव्यविमुख लोगों में क्रांति लाने के लिए प्रेरित किया है।इस क्रांति विप्लव के बिना समाज की जड़ता और कर्तव्यविमुखता में परिवर्तन लाना संभव नहीं है। निराला यह कविता जीवन से हताश,निराश व विश्वास

खो चुके लोगों के भीतर सोई हुई क्रांति को फिर से जगाते हुए लिखते हैं-"बादल गरजो, विकल-विकल उन्मन थे उन्मन, विश्व के निदाघ के सकल जन,तप्त धरा जल से फिर, शीतल कर दो, बादल गरजो। इसी प्रकार आर्थिक, सामाजिक क्रांति लाने की बेचैनी उनकी एक और कविता 'जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ, आओ आओ' में बहुत तीव्रता से व्यक्त हुई है-"जल्द जल्द पैर बढ़ाओ, आओ आओ, आज अमीरों की हवेली, किसानों की होगी पाठशाला।" इस कविता में निराला सामंतवादी व्यवस्था को बदलकर साम्यवाद की स्थापना करने के लिए किसानों को संगठित करने की बात कहते हैं। 'दीन' कविता में कवि ने जमींदारी व्यवस्था के भीतर मूंक भाव से अनेक कष्ट सहने को विवश कृषक-मजदूरों की पीड़ा को अंकित किया गया है-"सह जाते हो, उत्पीड़न की क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न।" निराला की अन्य कविताएं 'पाचक', 'विनय', 'लू के झोंकों', 'काले-काले बादल छाए', 'वे किसान की नई बहू की आंखें', 'महंगू महंगा रहा है', 'झींगुर डटकर बोला', 'छलांग मारता चला गया', 'कुत्ता भौंकने लगा' आदि कविताओं की केंद्रीय प्रतीत किसान जीवन ही है। ये कविताएं उस वर्ग का चित्र खींचती है जो अभाव और दुःख, दैन्य जीवन जीने को विवश है। छायावाद के दूसरे कवि सुमित्रानंदन पंत ने भी किसान जीवन पर आधारित कुछ कविताओं का सृजन किया है। उनकी 'वे आंखें' कविता जमीदार एवं महाजन के द्वारा भारतीय किसानों के भयंकर शोषण एवं अत्याचार के साथ-साथ सरकारी तंत्र की उन करतूतों को भी उजागर करती है। जिनके कारण किसान को अपनी खेती, घर, बैल, गाय एवं परिवार तक को खोना पड़ता है। जिसकी पीड़ा उसकी आंखों में साफ झलकती है। उसी पीड़ा का मार्मिक चित्रण कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है-"लहराते वे खेत दृगों में, हुआ बेदखल वह अब जिनसे","बिका दिया घर द्वार महाजन ने न ब्याज की कोड़ी छोड़ी, रह-रह आंखों में चुभती वह, कुर्क हुई बरधों की जोड़ी"स्पष्ट रूप से यह कविता दुष्चक्र में फंसे किसानों के व्यक्तिगत एक पारिवारिक दुःखों की परतों को खोलने के साथ-साथ विभाजित समाज की वर्गीय चेतना का खाका भी प्रस्तुत करती है। कृषक कविता में पंत जी किसानों को युग-युग का भार वाहक, वज्र मूढ़,हठी, रूढ़ियों का रक्षक, दीर्घ सूत्री, दुराग्रही,सशंक,ऋण ग्रस्त, समूह-कृपण, स्वाश्रित, शोषित, क्षुधार्दित, कूप- मंडूक आदि कह कर उसकी कमजोरियों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं-"वज्र मूढ़, जड़ भूत, हठी, वृष बांधव कर्षक है, ध्रुव ममत्व की मूर्ति, रूढ़ियों का चिर रक्षक, कर जर्जर, ऋण ग्रस्त,स्वल्प स्मृति पैत्रिक भू-धन" 'संध्या के बाद' कविता में कवि ने खेतों पर दिन भर काम करके थके कदमों से घर लौट रहे किसानों का बहुत सुंदर चित्रण किया है-"लौटे कृषक श्रांत श्लथ डग घर "यही दृश्य उनकी एक और कविता 'बांसों का झुरमुट' में भी देखने को मिलता है-"ये नाप रहे निज घर का मग, भारी है जीवन! भारी पग!!"इन कविताओं के अतिरिक्त पंत जी ने 'यह धरती कितना देती है', 'ग्राम चित्र', 'कवि किसान', 'ग्राम युवती', 'ग्राम कवि' आदि कविताओं में जहां सुनहली फसलों, खेतों की हरियाली,जौं-

गेहूं की स्वर्णिम वालियों, सिर पर सुशोभित अनाज की डाली का जिक्र किया है वहीं किसानों की दरिद्रता, विपन्नता, निराशा को भी सुंदर शब्दावली में अंकित किया है। प्रगतिवादी कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन अपनी 'ओ मजदूर किसान, उठो'कविता के माध्यम से शोषण व अन्याय की चक्की में पिसते हुए मजदूर एवं किसान वर्ग को उनके भीतर छिपी हुई शक्ति का अहसास दिलाकर शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करते हुए कहते हैं-"उठो, उठो ओ नंगो भूखो, ओ मजदूर किसान, उठो" भगवती चरण वर्मा ने 'भैंसागाड़ी' कविता में एक तरफ तो महानगर में रहने वाले वैभव संपन्न सेठ साहूकारों की ऐसोआराम भरी जिंदगी एवं उनकी दानवता को चित्रित करने के साथ ही दूसरी तरफ दिन-रात खेतों में जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद सारी सुख सुविधाओं से वंचित एवं दाने दाने को तरस रहे कृषक व उनके परिवार की हालत को इस प्रकार चित्रित किया है-" वे भूखे अधखाए किसान, भर रहे जहां सूनी आहें, नंगे बच्चे चिथड़े, पहने माताएं जर्जर डोल रहीं, है जहां विवशता नृत्य कर रही, धूल उड़ आती हैं राहें!"निश्चित रूप से यह कविता फांकाकसी की जिंदगी जीने वाले किसानों की करुण कथा कहती हैं।रामधारी सिंह दिनकर ने भी साम्राज्यवादी शोषण को भारतीय किसानों की दुर्दशा का मुख्य कारण माना है। उन्होंने किसानों की पीड़ा को इस प्रकार व्यक्त किया है-"जेठ हो कि पूस हो, हमारे कृषकों को आराम नहीं है, वसन कहां? सूखी रोटी मिलती दोनों शाम नहीं है", "बैलों के य बंधु वर्षभर क्या जाने कैसे जीते हैं" कवि ने देखा है कि खून पसीना एक करके कृषक अनाज उत्पन्न करते हैं किंतु उनके पसीने का मूल्य खलिहानों से घर तक नहीं पहुंचता। पूंजीपतियों के दानवी पंजे बीच में ही दबोच लेते हैं। यही नहीं ऋण शोधन के लिए किसानों को अपने बच्चों का पेट काटकर दूध-घी भी बेचना पड़ता है। कविता की पुकार में वे कहते हैं-" ऋण शोधन के लिए दूध घी बेच-बेच धन जोड़ेंगे, बूंद बूंद बेचेंगे अपने लिए नहीं कुछ भी छोड़ेंगे" दिनकर जी अपनी कविताओं में कृषक के साथ-साथ उसके परिवार की दीन-हीन दशा का यथार्थ चित्रण करते हैं।प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल का मन मूलत: किसान जीवन की समस्याओं एवं किसान प्रकृति के चित्रण में रमा है। किसान जीवन की सभी झांकियों के वास्तविक चित्र उनकी कविताओं में देखे जा सकते हैं। किसान का संपूर्ण जीवन उसकी समस्त आशाएं, आकांक्षाए उसके सुख-दुःख सब कुछ उसकी धरती से ही जुड़े रहते हैं। वे दिन-रात मेहनत करके संपूर्ण देश के लिए अनाज उपजाते हैं। इसलिए केदारनाथ अग्रवाल इस धरती पर सबसे ज्यादा अधिकार किसान का ही मानते हैं।वह 'यह धरती है उस किसान' की कविता में लिखते हैं-"यह धरती है उस किसान की, जो मिट्टी का पूर्ण पारखी, जो मिट्टी के संग-साथ ही, तपकर,गलकर, जीकर,मरकर, खपा रहा है जीवन अपना।"किसान को आजीवन गरीबी और अभाव में ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है। यह सिलसिला पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है। इस प्रशंग का मार्मिक चित्रण केदारनाथ अग्रवाल की 'पैतृक

संपत्ति' कविता में स्पष्ट दिखाई पड़ता है-"जब बाप मरा तब यह पाया, भूखे किसान के बेटे ने, घर का मलवा टूटी खटिया, कुछ हाथ भूमि वह भी परती" केदारनाथ अग्रवाल ने खेत और किसान का संबंध राधा और कृष्ण के जैसा माना है। वे 'आसमान की ओढ़नी ओढ़े' कविता में लिखते हैं-"आसमान की ओढ़नी ओढ़े, धानी पहने, कृषक घंघरिया, राधा बनकर धरती नाची, नांचा हंसमुख, कृषक संवरिया"केदारनाथ अग्रवाल की "कटुई का गीत', 'किसान से', 'हम चलते हैं फिर खेतों में', 'अभिशाप जग का', 'आग लगे इस रामराज में' आदि कविताएं किसान जीवन से जुड़ी हुई है। नागार्जुन की कई कविताओं में किसान जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। नागार्जुन ने किसान जीवन की पीड़ा को करीब से देखा ही नहीं बल्कि भोगा भी है। अपनी इस स्थिति का चित्रण कवि ने 'रवि ठाकुर' नामक कविता में किया है-"पैदा हुआ था मैं, दीन-हीन अपठित कृषक कुल में, आ रहा हूं पीता अभाव का आसव, ठेठ बचपन से"नागार्जुन की कई कविताओं में किसान यथार्थ, अनुभव और स्मृति के परिदृश्य आकर्षण तथा जीवन राग के रूप में आते हैं-"याद आता मुझे अपना वह तरउनी ग्राम, याद आती लीचियां औ आम"इसके अतिरिक्त नागार्जुन की 'बहुत दिनों के बाद', 'मेरी भी आभा है इसमें', ‘सिके हुए दो भुट्टे', 'फसल' में भी किसान जीवन का सुंदर चित्रण हुआ है। त्रिलोचन की दृष्टि एक सजग किसान की दृष्टि है जो उस जीवन को स्वयं जीते और अभावों को झेलते हुए मिली है। त्रिलोचन का मन एक किसानी का मन है। इसलिए उन्हें बादलों से आत्मीयता है। बादलों को देख कर वे पुकार उठते हैं -"उठ किसान ओ, उठ किसान ओ, बादल घिर आये हैं, तेरे हरे-भरे सावन के साथी ये आये हैं।"त्रिलोचन किसान जीवन के वास्तविक सुख-दुःख, आशा-निराशा और संघर्षों की कविता लिखते हैं। वे किसान को जीवन के लिए प्रकृति से संघर्ष करते हुए चित्रित करते हैं -"मिलकर वे दोनों प्रानी, दे रहे खेत में पानी"मुक्तिबोध की कविता में भी श्रमरत किसानों के बिंब मिलते हैं। प्रभाकर माचवे की 'गेहूं की सोच' कविता गेहूं की नियति के माध्यम से किसानों की दुर्दशा और आर्थिक मजबूरियों का चित्र प्रस्तुत करती है-"बहुत कुछ जायेगा लगान, कुछ जाएगी कर्ज-किस्त, रह जाएगी झोपड़ियों की, उन भूखी अंतड़ियों के लिए, सूखी एक बेर की रोटी"प्रभाकर माचवे की 'वसंतागम' कविता खेतों में फसल पक जाने से वसंत ऋतु के आगमन का किसान जीवन में उल्लास प्रस्तुत करती है। भवानी प्रसाद मिश्र के लिए तो किसान धरती पर उल्लास और आनंद के स्वर्गिक संगीत का सर्जक ही है। अपनी 'किसान का गीत' शीर्षक कविता में वे किसान को संबोधित ही करते हैं।-"भाई! कुदाली चलाते चलो, मिट्टी को सोना बनाते चलो "इसी तरह 'गांव' शीर्षक कविता भी किसान संकल्प की कविता है।-"जोतना है खेत हल के साथ निकले" मिश्र जी की 'मधुमास','यह वर्षा', 'पहला पानी', 'माटी का अनुभव', 'हम बोते हैं', 'सावन','शरीर और फसलें' आदि कविताएं सीधे-सीधे किसान जीवन का चित्रण करती हैं। शमशेर की कई कविताओं में यथार्थ का चित्रण

मिलता है। 'फिर एक हिलोर उठी','शाम होने को हुई' कविता में वे लिखते हैं-"शाम होने को हुई लौटे किसान" कुआनो नदी' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की एक लंबी और चर्चित कविता है। जिसमें नदी की स्मृतियों के साथ गांव के किसान जीवन की स्मृतियां पूरी संवेदनशीलता के साथ उपस्थित हैं। कविता की कुआनों नदी ग्रामीण जन और किसानों के दुःख की महानदी बन जाती है। सर्वेश्वर दयाल की 'सूखा' कविता भी किसान जीवन की एक गंभीर त्रासदी से संबंधित है। केदारनाथ सिंह की अनेक कविताओं में किसान जीवन से लिए गए अप्रतिम प्रतिबिंब देखे जा सकते हैं-"मैं उसे बरसों से जानता था, एक अधेड़ किसान, थोड़ा थका हुआ, थोड़ा झुका हुआ" केदारनाथ सिंह की बहु चर्चित लंबी कविता 'बाघ' के कई अंश किसान जीवन से संबंधित हैं। इसी प्रकार नई कविता से लेकर समकालीन कविता तक अनेक कवियों ने किसान जीवन पर कविताएं लिखी। जिसमें शरद देवड़ा की 'बैरिन रात' जितेंद्र नाथ पाठक की 'शरद घन' ज्ञानेंद्रपति की 'संशयात्मा','मैदानों वाला गांव', अरुण कमल की 'धार' उमाशंकर तिवारी की 'खेतों में आंसू बोते हैं',कैलाश गौतम की 'रामदुलारे',दिनेश कुशवाह, श्रीप्रकाश शुक्ल, रामाज्ञा शशिधर आदि कवियों की कविताओं में किसान जीवन की सफल अभिव्यक्त हुई है।

विषय चयन एवं प्रेरणा-

शोधार्थी स्वयं एक किसान परिवार से है। किसान परिवार में पले-बड़े होने के कारण वह किसान जीवन की सभी परिस्थितियों से भली-भांति परिचित है। जब उसे शोध करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो उसने किसान जीवन पर शोध करने का निर्णय लिया और अपनी शोध निर्देशिका डॉक्टर रंजना पांडेय के समक्ष इस विषय को रखा। इस विषय पर विचार करने के पश्चात उन्होंने मुझे आधुनिक हिंदी कविता के माध्यम से किसान जीवन पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया और विषय के रूप में 'आधुनिक हिंदी कविता में किसान जीवन : संवेदना और त्रासदी' शीर्षक का चयन किया।

विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता –

हिंदी में किसान जीवन पर पूर्व में भी अनेक शोध कार्य हुए हैं। जिसमें से, जाट भाषा साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से रामाज्ञा राय के 'किसान आंदोलन और हिंदी कविता' तथा राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय से बलराम वर्मा के 'हिंदी कहानियों में किसान जीवन' शोध कार्य उपलब्ध हुए हैं। सभी शोधकर्ताओं ने अपने अपने अनुसार किसान जीवन की अनेक समस्याओं को उभारा है। इसी कड़ी में मेरा 'आधुनिक हिंदी कविता में किसान जीवन : संवेदना और त्रासदी' शोध कार्य होगा। जिसमें किसान जीवन की संवेदना और त्रासदी के साथ ही उन

सभी पहलुओं पर बात की जाएगी जो पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं से छूट गईं हैं। शोधार्थी ने अपने शोध में नवीनतम रचनाओं को सम्मिलित किया है। जो शोध को नवीन दृष्टि प्रदान करेगा। शोधार्थी द्वारा किया गया शोध कार्य आगामी समय में उपयोगी एवं मौलिक हो ऐसा मेरा प्रयास रहेगा। प्रयास रहेगा।

शोध का उद्देश्य-

प्रस्तावित शोध विषय 'आधुनिक कविताओं में किसान जीवन: संवेदना और त्रासदी' में अंग्रेजों द्वारा किसानों के शोषण तथा किसानों के प्रकृति प्रेम एवं उनकी संवेदना पर कविताओं के माध्यम से बात करना हमारा उद्देश रहेगा। आधुनिक युग में बढ़ते पूंजीवाद का किसानों के जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा इस पर भी बात की जाएगी। इसके साथ-साथ आधुनिक युग के बड़े विचारक मार्क्स, गांधी, अंबेडकर के किसानों से संबंधित दृष्टिकोण पर बात करते हुए हिंदी कविता में वैचारिक प्रभाव दिखाना हमारा उद्देश रहेगा। किसानों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति का विश्लेषण भी आधुनिक कविता के माध्यम से किया जाएगा। भूमंडलीकरण और औद्योगिकरण के दौर में किसान जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा है। उसके कारण किसानी जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए और क्या-क्या समस्याएं उत्पन्न हुई आधुनिक कविताओं के माध्यम से इसका भी अध्ययन किया जाएगा। किसान जीवन से संबंधित अन्य विशिष्ट समस्याओं को दिखाना भी हमारा उद्देश्य रहेगा।

शोध की आवश्यकता-

भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ व संपूर्ण देश के लिए अन्य पैदा करने वाले किसान को हमेशा से दरकिनार किया गया। हमारे देश की बड़ी विडंबना है कि आजादी के सात दशक पश्चात भी किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं निकाला जा सका बल्कि उनकी स्थिति दिन-प्रतिदिन और ज्यादा खराब होती जा रही है और उन्हें बढ़ते कर्ज के कारण आत्महत्या करने को मजबूर होना पड़ रहा है इसलिए इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता है जिससे उनकी समस्याओं को उजागर कर समाज के सम्मुख रखा जा सके और उनकी स्थिति में सुधार किया जा सके।

शोध प्रविधि-

प्रस्तावित शोध विषय 'आधुनिक कविता में किसान जीवन: संवेदना और त्रासदी' पर शोध कार्य करते समय शोध की की मौलिकता के साथ शोध की प्राथमिकता का ध्यान रखते हुए गहन अध्ययन किया जाएगा, साथ ही समीक्षात्मक, विचारात्मक,विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, ऐतिहासिक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा इसके

अतिरिक्त विषय से संबंधित संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ और पत्र-पत्रिकाओं द्वारा शोध की तथ्यपरक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा।

साहित्य सर्वेक्षण-

शोध विषय से संबंधित जानकारी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है-

1. डी. ई. आई, आगरा

2. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

3. डॉक्टर बी आर अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

4. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

5. काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

शोध कार्य की योजना एवं प्रकरण विभाजन-

आधुनिक हिंदी कविता में किसान जीवन : संवेदना और त्रासदी

रूपरेखा

प्रथम अध्याय- आधुनिक हिंदी कविता में किसान जीवन के वैचारिक संघर्ष एवं आयाम

1.1 स्वाधीनता आंदोलन और किसान

1.2 मार्क्स और किसान कविता

1.3 गांधी और किसान कविता

1.4 अंबेडकर और किसान कविता

1.5 अन्य विचारक और किसान कविता

द्वितीय अध्याय- उपनिवेशवाद का प्रभाव : किसान जीवन

2.1 ब्रिटिश शासन और किसान

2.2 सामंती परिवेश और किसान

2.3 औद्योगिकरण और किसान

2.4 भूमंडलीकरण और किसान

तृतीय अध्याय- आधुनिक कविता के संदर्भ में किसान जीवन का विश्लेषण

3.1 सामाजिक विश्लेषण और किसान

3.2 राजनीतिक विश्लेषण और किसान

3.3 आर्थिक विश्लेषण और किसान

चतुर्थ अध्याय- आधुनिक हिंदी कविता में मानवीय संवेदना और किसान

4.1 संवेदनाओं के विविध आयाम और किसान

4.2 प्रकृति प्रेम और किसान

4.3 लोकरंग और किसान

4.4 गँवई अभिजात्यता और किसान कविता

पंचम अध्याय- आधुनिक हिंदी कविता के परिपेक्ष्य में किसान जीवन की त्रासदी

5.1 किसान से मजदूर बनने की प्रक्रिया

5.2 परस्पर प्रकृति पर निर्भरता।

5.3 मिट्टी के भाव फसल की कीमत

5.4 अन्नदाता की आत्महत्या

षष्ठ अध्याय- आधुनिक हिंदी की क्षेत्रीय भाषाओं में किसान जनजीवन

6.1 पूर्वी हिंदी की क्षेत्रीय भाषाओं में किसान जनजीवन

6.2 पश्चिमी हिंदी की क्षेत्रीय भाषाओं में किसान जनजीवन

6.3 राजस्थानी हिंदी की क्षेत्रीय भाषाओं में किसान जनजीवन

6.4 हिंदी की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में किसान जनजीवन

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ

साक्षात्कार

वेबसाइट्स

आधार ग्रंथ-

1 भारत-भारती- मैथिलीशरण गुप्त, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण 2021

2 किसान- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन,संस्करण 2001

3 अनामिका- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राजकमल प्रकाशन,संस्करण 2004

4 परिमल- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राजकमल प्रकाशन,संस्करण 2008

5 नई पत्ते- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण 2013

6 बेला- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण

2019

7 राग विराग-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लोक भारती प्रकाशन लोक,संस्करण 1998

8 युगांत- सुमित्रानंदन पंत, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण 2006

9 युगवाणी- सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन,संस्करण 1964

10 ग्राम्या- सुमित्रानंदन पंत, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण 2001

11 हुंकार-रामधारी सिंह दिनकर, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण 2009

12 दिल्ली-रामधारी सिंह दिनकर, लोक भारती प्रकाशन,संस्करण 2003

13 धूप और धुंआ-रामधारी सिंह दिनकर, श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, संस्करण1957

14 फूल नहीं रंग बोलते हैं- केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन, संस्करण 1965

15 जो शिलाएं तोड़ते हैं-केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन, संस्करण 1986

16 नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं-नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2017

17 कुछ कविताएं-शमशेर बहादुर सिंह, जगत शंखधर वाराणसी, संस्करण 1959

18 रूप तरंग-रामविलास शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, संस्करण1956

19 धरती-त्रिलोचन, नीलाभ प्रकाशन,संस्करण 1977

20 त्रिलोचन प्रतिनिधि कविताएं-त्रिलोचन शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, 2017

21 कुआनो नदी-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजकमल प्रकाशन, 2005

22 बाघ-केदारनाथ सिंह, वाणी प्रकाशन,संस्करण 2009

23 केदारनाथ सिंह की प्रतिनिधि कविताएं-केदारनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण2018

24 बुरे समय में नींद-रामाज्ञा शशिधर, अंतिका प्रकाशन, संस्करण 2011

संदर्भ ग्रंथ-

1 भारत का स्वतंत्रता संघर्ष- बिपिन चंद्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्करण 1990

2 भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद:एक अध्ययन-हिमांशु राय, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली, संस्करण 2013

3 भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएं-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2004

4 आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास-नंदकिशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2019

5 स्वामी सहजानंद और उनका किसान आंदोलन-अवधेश प्रधान, हिंदी बुक सेंटर दिल्ली, संस्करण 2011

6 किसान आंदोलन की साहित्यिक जमीन-रामाज्ञा शशिधर, अंतिका प्रकाशन, संस्करण 2012

7 प्रगतिवादी कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य में ग्रामीण चित्रण-डॉ जया पटेल, सरस्वती प्रकाशन, संस्करण 2013

8 सुमित्रानंदन पंत के काव्य में युगबोध और मानवतावाद-डॉ राम उदित शर्मा, नेहा पब्लिशर्स, संस्करण 2009

9 महाकवि सुमित्रानंदन पंत की छायावादोत्तर काव्य चेतना- डॉ विनय कुमार पाठक, लता साहित्य सदन संस्करण 2017

10 केदारनाथ अग्रवाल की कविता में लोक जीवन के रंग-डॉ सुनील कुमार दुबे, साहित्य भंडार संस्करण 2009

11 नागार्जुन के काव्य में शोषित वर्ग-डॉ सुरेश पत्तार, जनरिक, संस्करण 2017

12 नागार्जुन एवं केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में सामाजिक अभिव्यक्तियां और धारणाएं-डॉ अनुराग मिश्र, साहित्य भंडार, संस्करण 2009

13 प्रगतिशीलता की कसौटी पर त्रिलोचन-संतोष वर्मा, अतुल प्रकाशन, संस्करण 2009

14 त्रिलोचन का रचना संसार-महावीर अग्रवाल, नेहा पब्लिशर्स, संस्करण 2012

15 नागार्जुन एवं त्रिलोचन शास्त्री का काव्य सौंदर्य- डॉ पद्मा अवस्थी, सरस्वती प्रकाशन, संस्करण 2017

पत्र-पत्रिकाएं-

- प्रताप

- अभ्युदय
- नवशक्ति
- जनता
- हुंकार
- हल
- किसान

वेबसाइट्स

http://inflibnet.ac.in

shodhganga.inflibnet.ac.in

http://hiwikipedia.org

http://booksgoogle.co.in